Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा – 9

हिन्दी

क्षितिज (गद्य खंड)

अध्याय–3 : उपभोक्ता की संस्कृति (श्यामाचरण दुबे)

भाग – 3

अभ्यास प्रश्न

कुशाल सोलंकी

अभ्यास प्रश्न



1. लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?



Under CSR Support by ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



मानसिक
शारीरिक
सूक्ष्म आराम

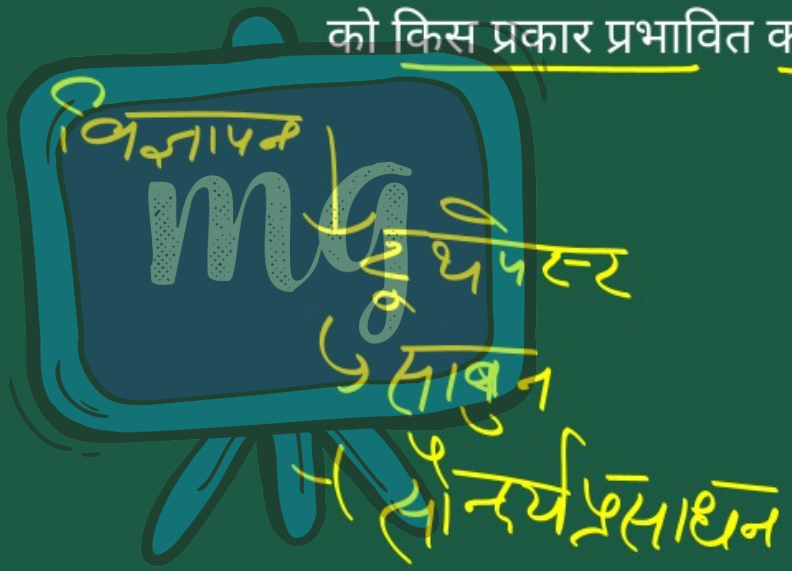
1. लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : उत्तर-लेखक के अनुसार, जीवन में 'सुख' का अभिप्राय केवल उपभोग सुख नहीं है। अन्य प्रकार के मानसिक, शारीरिक और सूक्ष्म आराम भी 'सुख' कहलाते हैं। परंतु आजकल लोग केवल उपभोग सुख को 'सुख' कहने लगे हैं।

अभ्यास प्रश्न



2. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?





2. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर : आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को पूरी तरह प्रभावित कर रही है। हम वही खाते-पीते और पहनते-ओढ़ते हैं जो आज के विज्ञापन कहते हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हम धीरे-धीरे उपभोगों के दास बनते जा रहे हैं। हम अपनी जरूरतों को अनावश्यक रूप से बढ़ाते जा रहे हैं। कई लोग तो केवल दिखावे के लिए महँगी घड़ियाँ, कंप्यूटर आदि खरीद रहे हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



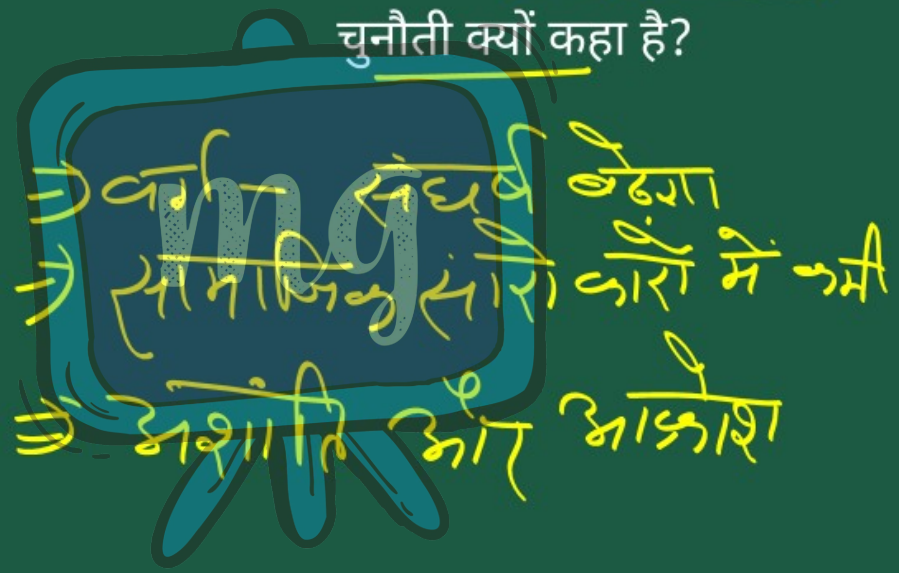
प्रतिष्ठा के नाम पर पाँच सितारा संस्कृति के गुलाम होते जा रहे हैं।

इस संस्कृति का सबसे बुरा प्रभाव हमारे सामाजिक सरोकारों पर पड़ रहा है। हमारे सामाजिक संबंध घटते जा रहे है। मन में अशांति और आक्रोश बढ़ रहे हैं। विकास का लक्ष्य दूर होता जा रहा है। हम जीवन के विशाल लक्ष्य से भटक रहे हैं। सारी मर्यादाएँ और नैतिकताएँ टूट रही हैं। मनुष्य स्वार्थ-केंद्रित होता जा रहा है।

अभ्यास प्रश्न



3. लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?





3. लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

उत्तर : लेखक सामाजिक मर्यादाओं तथा नैतिकता के पक्षधर थे। वे सादा जीवन, उच्च विचार के कायल थे। वे चाहते थे कि समाज में आपसी प्रेम और संबंध बढ़ें। लोग संयम और नैतिकता का चारण करें।

उपभोक्तावादी संस्कृति इस सबके विपरीत चलती है। वह भोग को बढ़ावा देती है और नैतिकता तथा मर्यादा को तिलांजलि देती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

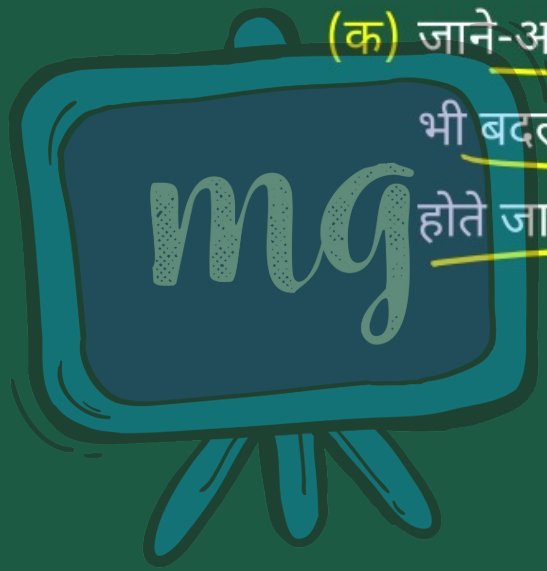


संस्कृति की पहचान

गाँधी जी चाहते थे कि हम भारतीय अपनी बुनियाद पर कायम रहें, अर्थात् अपनी संस्कृति को न त्यागें। परन्तु आज उपभोक्तावादी संस्कृति के नाम पर हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को भी मिटाते जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने उपभोक्तावादी संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती कहा है।

अभ्यास प्रश्न





4. आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।



4. आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

उत्तर : उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव अत्यंत सूक्ष्म है। इसके प्रभाव में आकर हमारा चरित्र बदलता जा रहा है। हम उत्पादों का उपभोग करते-करते उनके गुलाम होते जा रहे हैं। यहाँ तक कि हम जीवन का लक्ष्य ही उपभोग करना मान बैठे है।

अभ्यास प्रश्न





हम उत्पादों का उपभोग नहीं कर रहे, बल्कि उत्पाद हमारे जीवन का भोग कर रहे है।

अभ्यास प्रश्न



(ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हो।





(ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हो।

उत्तर : सामाजिक प्रतिष्ठा अनेक प्रकार की होती है। प्रतिष्ठा के कई रूप तो बिल्कुल विचित्र होते हैं। उनके कारण हम हँसी के पात्र बन जाते हैं। जैसे अमरीका के लोग मरने से पहले अपनी समाधि का प्रबंध करने लगे हैं। वे धन देकर यह सुनिश्चित करते हैं उनकी समाधि के आसपास सदा हरियाली रहेगी और मनमोहक संगीत बजता रहेगा।

अभ्यास प्रश्न

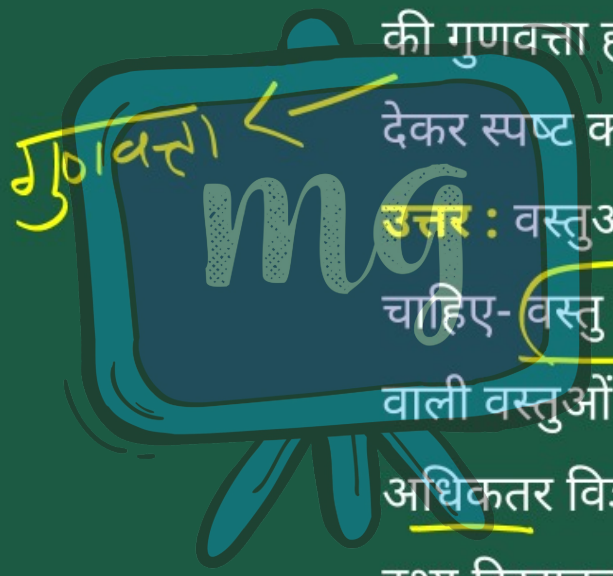


5. आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।



अभ्यास प्रश्न





5. आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।

उत्तर : वस्तुओं को खरीदने का एक ही आधार होना चाहिए- वस्तु की गुणवत्ता। विज्ञापन हमें गुणवत्ता वाली वस्तुओं का परिचय करा सकते हैं। परंतु अधिकतर विज्ञापन भी भ्रम पैदा करते हैं। वे आकर्षक दृश्य दिखाकर गुणहीन वस्तुओं का प्रचार करते हैं। उदाहरणतया, चाय की पत्ती के विज्ञापन में लड़कियों के नाच का कोई काम नहीं।

अभ्यास प्रश्न



परंतु अधिकतर लोग नाच से इतने प्रभावित होते हैं कि दुकान पर खड़े होकर वही चायपत्ती खरीद लेते हैं, जिसका ताज़गी से कोई संबंध नहीं। हमें 'वाह ताज!' जैसे शब्दों के मोह में न पड़कर चाय की कड़क और स्वाद पर ध्यान देना चाहिए। वही हमारे काम की चीज़ है।

अभ्यास प्रश्न



6. संस्कृति की नियंत्रक-शक्तियाँ कौनसी है, जो क्षीण हो चली हैं?





6. संस्कृति की नियंत्रक-शक्तियाँ कौनसी है, जो क्षीण हो चली हैं?

उत्तर : भारतीय संस्कृति की नियंत्रक शक्तियाँ हैं- भारतीय धर्म, परंपराएँ तथा आस्थाएँ। आज इन्हीं पर से विश्वास उठ गया है। आज न तो धर्म पर विश्वास रहा है, न मंदिर पर, न पुजारी पर और न संन्यासी पर। इस कारण पुरानी परंपराएँ और आस्थाएँ खंडित हो चली हैं। लोग अब इनके अनुसार नहीं चलते, बल्कि पश्चिम से आई उपभोक्तावादी संस्कृति के अनुसार चल रहे है।

अभ्यास प्रश्न



7. भारत की सांस्कृतिक अस्मिता किस कारण नष्ट हो रही है?





7. भारत की सांस्कृतिक अस्मिता किस कारण नष्ट हो रही है?

अस्तित्व

उत्तर : भारत की सांस्कृतिक अस्मिता का अर्थ है- भारत की सांस्कृतिक पहचान। यह पहचान उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रसार के कारण नष्ट हो रही है। भोगवाद में पड़ने के कारण भारतीय लोग अपना धर्म, अपनी परंपराएँ, अपनी नैतिक विशेषताएँ और मर्यादाएँ खो रहे हैं। वे भारतीयता छोड़कर 'उन्नत इनसान' बनने की होड़ में पड़ गए हैं।